शान्ति के लिए शिक्षा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद
अग्रवाल कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन
बल्लबगढ़, फरीदाबाद, हरियाणा

सारांश:-

शांति के लिए शिक्षा कई मायनों में शांति शिक्षा से अलग है ,क्योंकि शांति शिक्षा से भिन्न शांति के लिए शिक्षा की संस्कृति को बढ़ावा देने के लक्ष्य को एक स्वरूप देने के के उद्देश्य के रूप में मानती है। ध्यान देने की बात यह है कि यदि पूरी स्पष्टता व तत्परता के साथ शांति के लिए शिक्षा को लागू किया जाए तो यह सीखने की प्रक्रिया को वास्तव में अधिकतम आनंददायक और सार्थक बना सकती है ।आज के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो शांति के लिए शिक्षा को व्यक्तिगत रूप में (चारित्रिक, नैतिक और व्यावहारिक),पारिवारिक रूप में माता-पिता ,सामाजिक ,सांस्कृतिक तथा वैश्विक रूप से अपनाना आवश्यक हो गया है। इन सभी क्षेत्रों के लिए शांति की शिक्षा को शामिल करना अतिआवश्यक हो गया है ,क्योंकि इन सभी का प्रभाव किसी न किसी ढंग से प्रत्यक्ष रूप में मानव जीवन पर हो रहा है ।इसलिए शांति के लिए शिक्षा को संक्षिप्त में ही सही वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर विद्यालयी पाठ्यचर्या में शामिल करने की आवश्यकता है क्योंकि यह पाठ्यचर्या के बोझ में कमी की मांग करती है । इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए हमारे अनुसार शांति के लिए शिक्षा के माध्यम से विद्यालयी जीवन में खतरनाक तरीके से बढ़ रही हिंसा को रोका जा सकता है,जैसे -विद्यार्थियों में बढ़ती हिंसा , अनुशासन की कमी , तनाव , आत्महत्या आदि गंभीर समस्यायों को सरलता से हल किया जा सकता है ।भारतीय सन्दर्भ में शांति के लिए शिक्षा का मुख्य कार्य शिक्षा के दो प्रमुख लक्ष्यों के सन्दर्भ में निर्धारित किया गया है १. व्यक्तित्व का निर्माण २. उत्तरदायी नागरिक का निर्माण ,क्योंकि प्रत्येक भारतीय की धर्म में न सही किन्तु नागरिकता में तो सामान्य रूप से भागीदारी है ही ,जिसके आधार पर शांति के लिए शिक्षा के मुख्य कार्य क्षेत्र निम्नवत हैं -(क) शिक्षा के द्वारा व्यक्तियों में शांति के झुकाव पैदा करना (ख)विद्यर्थियों के अंदर उन सामाजिक कौशलों और अभिरुचियों का पोषण ,जो दूसरों के सामंजस्यपूर्वक जीने के लिए जरूरी है (ग) संविधान में सुविचारित सामाजिक न्याय की अवधारणा पर बल देना (घ) धर्मनिरपेक्ष संस्कृति को प्रचारित करने की आवश्यकता और कर्तव्य (च) लोकतान्त्रिक संस्कृति को प्रेरित करने वाले उत्प्रेरक के रूप में शिक्षा (छ) शिक्षा द्वारा राष्ट्रीय अखंडता को बढ़ावा देना (ज) जीवनशैली सम्बन्धी एक आंदोलन के रूप में शांति के लिए शिक्षा। इन सबके अतिरिक्त कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं और संस्कारों पर भी ध्यान देना आवयश्यक है जो कि शांति के लिए शिक्षा को प्रभावपूर्ण ढंग से लागू करने के लिए आवयश्क हैं जिसमें शिक्षकों की शिक्षा , पाठ्यपुस्तक लेखन ,विद्यलयी ढांचा , मूल्याङ्कन , मीडिया की साक्षरता ,अभिभावक - शिक्षक की भागीदारी और शांति के लिए शिक्षा को लागू करने के लिए एकीकरण के व्यावहारिक निहितार्थों को प्राथमिकता वाली कार्यनीति मानते हुए सम्बोधित करना। इन सभी क्रियाओं को परिणाम तक पहुंच पहुँचाने के लिए शांति के लिए शिक्षा को अलग विषय में न रखा जाय नहीं तो इसे पाठ्यचर्या का बोझ समझा जायेगा ,इसके लिए इसे सभी विषयों में निहित एक परिप्रेक्ष्य के रूप में रखा जाए, अतः शांति के लिए शिक्षा की पाठ्यचर्या को एक विषयवस्तु के खाके के रूप में रखा जाए जो निम्निलिखित प्रकार का हो सकता है -१. विषय सन्दर्भ २. अध्यापन पद्धतियां ३. पाठ्यसहभागी क्रियाएं ४. कर्मचारियों का विकास ५. कक्षा नियोजन।

अवधारणा

आज विश्व के किसी भी क्षेत्र में शांति नहीं है ,जिसके अनेक कारण है। लेकिन विश्व का कोई भी व्यक्ति नहीं चाहता कि अशांति रहे बल्कि सभी चाहते है कि शांति होनी चाहिए ,जब सभी कि इच्छा शांति है तो प्रश्न उठता है कि शांति आये कैसे ? इन सभी प्रश्नों का समाधान सिर्फ एक ही उपाय द्वारा संभव है जो है शिक्षा अर्थात शिक्षा द्वारा ही सभी को शांति का पाठ पढ़ाया जा सकता है।

जैसा कि गाँधी जी ने भी कहा था कि--
"अगर हम विश्व को शांति का पाठ पढ़ाना चाहते है, तो हमे शुरुआत बच्चों से करनी होगी। "
मारिया मांटेसरी ने भी यही कहा था कि --
" सारी शिक्षा शांति के लिए ही है। "
इन सभी बिंदुओं को देखा जाये तो स्पष्ट है कि हमें आज सम्पूर्ण विद्यालयी पाठ्यचर्या में शांति शिक्षा को शामिल करने की आवश्यकता है। क्योंकि अब सोचने और समझने का समय आ गया कि इसका प्रारम्भ कैसे किया जाय इसी परिपे0क्ष्य में डेनियल बेस्टर ने भी कहा था कि शिक्षा का मकसद केवल ज्ञान का प्रसार भर नहीं है।
"क्योंकि ज्ञान में वह सब कुछ समाहित नहीं है,जो शिक्षा का व्यापक अर्थ अपने में समाये हुए है। भावनाएं अनुशासित हों, मनोभाव संतुलित हो,शुद्ध और हितकारी लक्ष्यों को प्रोत्साहित किया जाये और किसी भी प्रकार कि परिस्थिति में विशुद्ध नैतिकता कायम रखी जाए। "
शांति के लिए शिक्षा शांति शिक्षा से भिन्न है। शांति शिक्षा में शांति कि स्थिति पाठ्यचर्या में शामिल एक विषय की तरह है। दूसरी ओर शांति के लिए शिक्षा में हम शांति की बात जिस रूप में कर रहे हैं ,उस रूप में वह शिक्षा को गढ़ने सवारने वाली दृष्टि बनकर उभरती है। यह शिक्षा के आदान- प्रदान की प्रक्रिया में आने वाले एक युगांतकारी बदलाव का संकेत है। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्यम बाजार की शक्तियों से नियंत्रित है। शांति के लिए शिक्षा को बाजार से कोई परहेज नहीं है ,लेकिन यह बाजार को शिक्षा के उद्देश्य के रूप में नहीं देखती। बाजार हमारे जीवन संसार का एक हिस्सा भर है। शांति के लिए शिक्षा जीवन के लिए शिक्षा है ,और वह जीविका के लिए प्रशिक्षण मात्र नहीं है। उसका मकसद है,लोगों को ऐसे मूल्यों ,कौशलों और अभिवृत्तियों से लैस करना, जिनसे उन्हें दूसरों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार रखने वाले पूर्ण व्यक्ति और उत्तरदायी नागरिक बनाने में मदद मिले।
ऐतिहासिक रूप में नैतिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा, शांति के लिए शिक्षा के पूर्वज हैं इनमें कफी कुछ एकसा है। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एन.सी.ऍफ़.२००० के अनुसार धर्म,मूल्य-सृजन का स्रोत है। मूल्य और अभिवृत्तियाँ शांति की संस्कृति का निर्माण करने वाली भवन सामग्री की तरह है। तो फिर शांति के लिए शिक्षा की क्या विशिष्टता है ? हम आखिर क्यों एक नए दृष्टिकोण का बोझ उठाकर स्वयं को परेशान करें,या विद्यार्थियों की कमर दुहरी करें?

शांति के लिए शिक्षा पढाई के भार से खासी कमी लाने की बात करती है,न कि उसे बढ़ाने की। शांति जीने के आनंद को मूर्त रूप प्रदान करती है। शांति के दृष्टिकोण से देखें तो सीखना एक आनंददायक अनुभव होना चाहिए, क्योंकि आनंद ही जीवन का सार है। शांति गति से असंबन्ध नहीं है,आज के संसार में जल्दबाजी और चिंता सीखने के आनंद को नष्ट करती हैं न कि ये जीवन तथा सीखने के सामंजस्य को तवज्जो देती हैं ,जो कि आज की कड़वी सच्चाई है,जिसके कारण ही विद्यार्थियों के बीच लगातार आत्महत्या की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं।शांति के लिए शिक्षा में मूल्य शिक्षा भी समाहित है लेकिन दोनों एक ही नहीं हैं ,शांति मूल्यों की संगति के लिए प्रासंगिक तौर पर उपयुक्त और लाभदायक शिक्षाशास्त्रीय बिंदु है। शांति मूल्यों के उद्देश्यों को ठोस रूप देती है और उनके अंतरीकरण को प्रेरित करती है। इस तरह के ढांचे के अभाव में अधिगम प्रक्रिया में मूल्यों का समावेश हो नहीं पाता। इस तरह शांति के लिए शिक्षित करना मूल्य शिक्षा को सन्दर्भ प्रदान करने और संचालित करने की आदर्श रणनीति है। मूल्यों का आन्तरीकरण अनुभव के जरिये होता है,जिसका कक्षा केंद्रित शिक्षण और शिक्षण के पूर्णतया संज्ञानात्मक उपागम में अभाव पाया जाता है। शांति के लिए शिक्षा सीखने की प्रक्रिया को कक्षा -कक्ष की सीमा से मुक्त करने और इसे खोज के आनंद से अनुप्राणित जागरूकता के उत्सव में बदलने की मांग करती है।शांति के लिए शिक्षा सीखने को सन्दर्भ प्रदान करने का काम करती है। हम स्थानीय ,राष्ट्रीय और भूमंडलीय स्तर पर अभूतपूर्व हिंसा के युग में जी रहे हैं ,यह एक गंभीर बिंदु है, की विद्यालय ,जिन्हें शांति की पौधशाला बनना था,हिंसा भड़काने फ़ैलाने के केंद्र बन गए हैं। हाल ही की एक घटना में दिल्ली के एक कॉलेज का एक पुराना विद्यार्थी पटना में अपहरण गिरोह चलाता हुआ पकड़ा गया। अपने अनुभवों के आधार पर विद्यालयी परिवर्तन व्यवस्था में आये बदलावों पर एक शहरी अध्यापक क्या कहते हैं : " हिंसा में अप्रत्याशित

उछाल आया है। बच्चे जिन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं,वे हिंसक हैं। उनके खेल और उनकी रुचियाँ हिंसक हैं। उनके रिश्ते हिंसक हैं। लेकिन मैं उन्हें दोष नहीं देता। उनके घर ही हिंसा को बढ़ावा देते हैं। "

शांति के लिए शिक्षा को ऐसे ज्ञान, कौशल, अभिरुचि और मूल्यों का पोषण करना है,जिनसे शांति की संस्कृति निर्मित होती है। मानवीय मूल्यों के एक ढांचे के अंदर बच्चों का भौतिक,भावनात्मक,बौद्धिक और सामाजिक विकास इसके घेरे में आता है। शांति को शांति के लिए शिक्षा के दो मुख्य निहितार्थों के समग्रतामूलक वाहक के रूप में पहचाना गया है। यह निहितार्थ है : १. शांति मानवीय अस्तित्व के सभी पहलुओं और आयामों को परस्पर निर्भर तरीके से अपने अंदर शामिल किये हुए है। २. पारस्परिकता शांति में अन्तर्निहित है :-जैसे लोगों को हिंसा का मार्ग चुनने के बजाय शांति का मार्ग चुनने में सशक्त बनाना और उन्हें शांति का उपभोक्ता बनाने के बजाय उसका सर्जक बनाना। इस प्रकार शांति के लिए शिक्षा समग्रतामूलक बुनियादी शिक्षा का अनिवार्य घटक है , जिसका लक्ष्य व्यक्ति का समग्र विकास है ।शांति को अक्सर हिंसा की अनुपस्थिति से जोड़ा जाता है। गांधीजी शोषण को हिंसा का सबसे जाना पहचाना और व्यावहारिक रूप मानते थे। शोषण चाहे राज्य,समूह ,व्यक्ति या मशीन के द्वारा व्यक्ति का अथवा आदमी के द्वारा औरत का अथवा राष्ट्र के द्वारा राष्ट्र का हो। प्यार,सत्य,न्याय,समानता,सहनशीलता,सौहार्द,विनम्रता,एकजुटता और आत्मसंयम-शांति इन सारे मूल्यों को व्यवहार में लेने पर बल देती है। दूसरों पर हिंसा करने के बजाय स्वयं कष्ट सहने को प्राथमिकता देनी चाहिए।

गांधीजी की शांति सम्बन्धी धारणा निम्न है -

१.तनाव,टकराव और हिंसा के सभी रूपों की अनुपस्थिति ,शांति का अर्थ ही है ,सौहार्द्रपूर्वक मिलजुल कर रहने की क्षमता।

२.अहिंसक समाज व्यवस्था का निर्माण,यानि संरचनात्मक हिंसा से मुक्त समाज का निर्माण,सामाजिक,आर्थिक,सांस्कृतिक और राजनीतिक न्याय करने का कर्तव्य।

३.शोषण और अन्याय के सभी रूपों की अनुपस्थिति।

४.अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता और सहयोग।

५.पारिस्थितिकीय संतुलन और संरक्षण।

६.मन की शांति,या शांति का मनो -आध्यात्मिक आयाम।

शांति के लिए शिक्षा के प्रति उपागम

जब विद्यालय का वातावरण शांति के मूल्यों और रवैयों से अनुप्राणित होता है,तब पाठ्यचर्या में अन्तर्निहित शांति की धारणाओं को मिलने वाले अवसर अधिकतम होते हैं। शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य बातचीत,पाठ्यपुस्तकों में अध्यायों की रूपरेखा,शिक्षाशास्त्रीय उपागम और विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन -इन सारे आयामों की दिशा शांति की ओर होनी चाहिए ।इसके लिए शिक्षार्थी व शिक्षक की अन्योन्यक्रिया,पाठ्यपुस्तक के अध्याय और उन्हें पढ़ाने का शिक्षाशास्त्र,विद्यालय के प्रबंधक और प्रशासनिक भी शांति के लिए शिक्षा की ओर अभिमुख होना चाहिए।

आज देश में शांति शिक्षा की सबसे अधिक आवश्यकता किसी भी देश के युवा वर्ग के लोगों को है, क्योंकि उनका दिमाग बहुत ही उत्तेजित और संवेदनशील होता है साथ ही यही युवा देश के कर्णधार होते हैं। इसलिए उनकी उत्तेजना और संवेदनशीलता का सही उपयोग करना अति आवश्यक है वरना वे गलत रास्ते अपनाने लगते हैं ,इसके लिए आवश्यक है कि उनके इस दिमाग में समय पर ही शांति नाम का बीज बो दिया जाये ,क्योंकि देखा जाय तो चरों तरफ इसकी आवश्यकता महसूस की जा रही है।

इन सब के लिए हमें अपनी शिक्ष व्यवस्था से करनी होगी जिसके लिए निम्न माध्यम अपनाये जा सकते हैं -

१.विषय सन्दर्भ

२.अध्यापन पद्धतियां

३.पाठ्य सहभागी क्रियाएं

४.कर्मचारियों का विकास

५.कक्षा नियोजन

६.विद्यालय नियोजन

विषय सन्दर्भ :- शांति शिक्षा कार्यक्रम को कक्षा में स्वयं के लिए अपनाना चाहिए ,और इसे पाठ्यक्रम में इस प्रकार रखना चाहिए जिससे वह अलग विषय के रूप में न दिखाई देकर सभी विषयों में अन्तर्निहित हो। इसे वर्तमान पाठ्यक्रम के अनुसार ही पढ़ाया जाना चाहिए लेकिन पढ़ाने की विधि,शांति से सम्बंधित कार्यक्रमों तथा नवीन विषयों के माध्यम से समझाया जाना चाहिए। शांति शिक्षा को विद्यार्थियों की कक्षा , उम्र और शिक्षा के हिसाब से ही समझाया जाना चाहिए। प्रत्येक विषय के माध्यम से शांति शिक्षा की संकल्पना को विद्यार्थियों के दिमाग और दृष्टिकोण दोनों में बदलाव लाने तथा विश्व मूल्यों को आत्मसात करने हेतु प्रयोग किया जाना चाहिए। शांति शिक्षा को निम्न विषयों के माध्यम से बड़ी ही सरलता से आत्मसात करवाया जा सकता है -

१.भाषा - भाषा का सबसे प्रमुख कार्य व्यक्ति को विश्व में शांति का एहसास कराना है।

कक्षा में विद्यार्थियों को भाषा के माध्यम से ही आपसी समस्यायों को सुलझाना,मूल्यों को आत्मसात करना तथा कक्षा में होने वाली विविध प्रकार की गतिविधियों को समझने का मौका मिलता है। जिससे विद्यार्थियों में भाषा कौशल,गंभीर विचार चिंतन कौशल तथा सामाजिक एकीकरण करने के कौशलों का अभ्यास करने का भी मौका प्रदान होता है। शांति शिक्षा को भाषा के माध्यम से एकीकरण करने से सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा मिलता है। किसी भी प्रकार की सूचना देने का कार्य भी अधिक प्रभावशाली होता है तथा कई गंभीर समस्यायों को भाषा द्वारा आसानी से समझाया जा सकता है जिसके लिए निम्न उपाय हैं -१.पढ़ना और लिखना २. बोलना और सुनना ३.शांति से सम्बंधित शब्दों का रोज अभ्यास ४. मानव अधिकार की जानकारी ५.संचार कौशल ६.कथा लेखन तथा अभिनय ७. वाद -विवाद ८.नाटक ९.समझौता

उपर्युक्त सभी बातों से शांति शिक्षा को अपनाने वाले विद्यार्थियों को निम्न लाभ हो सकते हैं:-

१.विद्यार्थी युद्ध तथा शांति के बारे में जागरूक होंगे।

२.विद्यार्थियों में समानुभूति के कौशलों का विकास होगा।

३.विद्यार्थी व्यक्तिगत,सामाजिक तथा वैश्विक बातों से अवगत होंगे।

४.विद्यर्थी स्वयं की भावनाओं को समझेंगे तथा दूसरों की भावनाओं को भी समझ सकेंगे।

५.विद्यर्थी शांति तथा न्याय के लिए स्वयं सहयोग करने हेतु प्रोत्साहित होंगे।

गणित:- इस विषय द्वारा वैज्ञानिक तथा तंत्रज्ञान विकास से विकसित और विकासशील दोनों ही देशों में शांति को स्थापित करने में मदद मिल सकती है। इसके द्वारा बहुत ही आसानी से विश्व की संपत्ति,आर्थिक विकास,जनसंख्या शैक्षणिक खर्चों तथा पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारियों का हिसाब रखा जा सकता है। इस विषय द्वारा शांति संकल्पना को निम्न प्रकार से लाभ होंगे :-

१.जब नक्शा,चार्ट या फिर इसी प्रकार की कोई बात विद्यार्थियों को समझाते हैं ,तो वे सीखने के साथ ही अपने देश का दूसरे देश से सम्बन्ध को भी समझते हैं।

२.विद्यार्थी बजट के माध्यम से देश व विदेश दोनों की आर्थिक परिस्थिति के प्रति जागरूक होंगे

३.इससे विद्यर्थी में समस्या हल करने का कौशल विकसित होगा।

४.विद्यार्थी गणित और संस्कृति को समझ सकेंगे।

५.इससे विद्यर्थियों में पर्यावरण के प्रति गंभीर सोच का निर्माण होगा।

विज्ञानं:- शांति को सीखने के लिए खास प्रकार के प्रशिक्षण या अध्यापन विधि की आवश्यकता नहीं होती है बल्कि विज्ञानं का अध्यापक विद्यार्थियों को वातावरण तथा पारिस्थितिक पर्यावरण के प्रति जागरूक करके शांति से अवगत करा सकता है इसकी हानियों से मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को बता सकता है। विज्ञानं की निम्न शाखाओं द्वारा शांति पाठ को पढ़ाया जा सकता है :-

जीवविज्ञान:- पर्यावरण की रक्षा करने की जिम्मेदारी सभी देशों, समाज और लोगों की एक सामान है। जीवविज्ञान द्वारा इसी पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए पेड़ों को हरा-भरा रखने से होने वाले लाभों,मौसम व वातावरण में होने वाले बदलाव,जमीन-पानी और वायु प्रदूषण,तेल के फ़ैल जाने से समुद्र में होने वाला नुकसान, मछलियों को नुकसान,बारूदी सुरंग से पर्यावरण को नुकसान ,युद्ध के दुष्परिणाम आदि के बारे में विद्यार्थियों को सीखना आवयश्क है।

रसायन विज्ञानं:- इस विज्ञानं के माध्यम से वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग किया जाता है किन्तु विज्ञानं की कुछ नीतियां होती है उसका पालन किया जाना अति आवयश्क है, नहीं तो रसायन विज्ञानं के कारन कई प्रकार की हानियां भी हो सकती हैं।

भौतिक विज्ञानं:- भौतिक विज्ञानं के विद्यार्थियों को परमाणु के द्वारा होने वाले दुष्परिणाम तथा मानव के लिए यह कितना खतरनाक है इसकी जानकारी दी जानी चाहिए। न्यूक्लीयर युद्ध इस पाठ के माध्यम विद्यार्थियों को इसकी ताकत, उसका उपयोग तथा न्यूक्लीयर द्वारा संघर्ष को समाप्त करने के प्रति जागरूक करना चाहिए।

सामाजिक विज्ञानं :- शांति शिक्षा को प्राकृतिक रूप से ही कक्षा में पढ़ाया जाना चाहिए। आज वर्तमान और भविष्य की दोनों ही पीढ़ी को हिंसा न करने पर जोर देने वाली शिक्षा देना आवश्यक हो गया है। जिसके लिए विद्यार्थियों को करके सीखने पर जोर दिया जाना जरूरी है। सामाजिक विज्ञानं का प्रमुख उद्देश्य ही यह है कि विद्यार्थियों को सांस्कृतिक,सामाजिक,मानसिक तथा आर्थिक रूप से सक्षम बनाया जाये। सामाजिक विज्ञानं के अंतर्गत आने वाले विभिन्न विषयों के माध्यम से शांति का पाठ पढ़ाया जा सकता है जिनका विवरण निम्न प्रकार से है :-

इतिहास:- सामाजिक विज्ञानं के इतिहास विषय के माध्यम से विद्यर्थियों को शांति के बारे में बताया जा सकता है जैसे युद्ध से होने वाले लाभ व हानि दोनों के बारे में अच्छे से समझाया जा सकता है। भूतकाल में घटित घटनाओं के बुरे परिणाम ,जिसे आज तक हम लोग भोग रहे हैं ,उन सब की जानकारी विस्तार से दी जानी चाहिए। इतिहास द्वारा विद्यार्थियों को निम्नलिखित बातें बताई जानी चाहिए :-

१. विद्यार्थियों को भूतकाल तथा वर्तमान में घटित शांति से जुडी हुई गतिविधियों के बारे में बताकर यह समझाया जाना चाहिए कि किस प्रकार से शांति शांति का निर्माण किया जा सकता है।

२.पाठ के द्वारा जिम्मेदारियों और अधिकारों के बारे में पढ़ाया जाना चाहिए न कि खून -खराबे के बारे जिससे संघर्ष का समाधान शांति से करना वे लोग सीख सकें।

३.इस विषय द्वारा स्त्री पुरुष को समानता के अधिकार के बारे में सिखाया जाये जिससे सामाजिक संघर्ष में कमी लाई जा सकती है।

४.इस विषय द्वारा मानव अधिकार के बारे में भी समझाया जाना चाहिए जिसमें न्याय,समानता,सहिष्णुता आदि बातों पर अधिक जोर जा सके।

५. विद्यार्थियों को बताया जाना चाहिए कि किस प्रकार से संस्कृति विश्व में शांति लाने में सहयोग कर सकती है।

भूगोल :- भौगोलिक कौशल के द्वारा पर्यावरण तथा आर्थिक बातों से सामाजिक कल्याण किस तरह से प्रभावित होता है,इन सभी बातों को समझने से पता चलता है कि ,किस प्रकार से स्थानीय ,देशीय तथा अंतर्राष्ट्रीय समस्यायों को किस तरह से शांतिपूर्वक हल किया जा सकता है। भौगोलिक पाठ्यक्रम में अकाल,भोजन वितरण ,शरणार्थी, पर्यावरण प्रदूषण प्राकृतिक स्रोत आदि के बारे में सही-सही जानकारी दी जानी चाहिए। विद्यार्थियों को युद्ध हिंसा और संघर्ष इन तीनों ही बातों के बारे सही तरह से समझाया जाना चाहिए। सामाजिक विज्ञानं के माध्यम से विद्यार्थियों में संघर्ष का समाधान करने के कौशल का निर्माण होने लगता है,उसी के साथ ही अंदरूनी मूल्यों का निर्माण ,समझदारी,सहयोग आदि का भी निर्माण होने लगता है।

कला और डिजाइन:- कला और डिजाइन बनाना आदि की नई तकनीकों के माध्यम से विद्यार्थी कक्षा में ही सहयोग की भावना को सीख जाते हैं। कला में संघर्ष,मृत्यु,गुस्सा,सहयोग,शांति आदि से सम्बंधित डिजाइन बनाई जाती है। कला की कक्षा में विद्यार्थियों को हिंसात्मक चित्र व शांति के चित्रों को दिखाकर यह सिखाना चाहिए कि,किस प्रकार से विचार और भावनाओं को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। इस प्रकार विद्यार्थी शांति के लिए कार्य कर सकते हैं।

संगणक विज्ञानं:- आई.सी.टी.के माध्यम से हमनें सिर्फ दो देशों की दूरियों को ही नहीं दूर किया है बल्कि हमने इसके माध्यम से दो देशों के मध्य विचारों को जाना है और सभी देश अमन और शांति ही चाहते हैं। आई.टी. के माध्यम से ही विद्यार्थियों को इंटरनेट और समझदारी से भविष्य के प्रति सकारात्मक सोच का निर्माण हुआ है।

अध्यापन पद्धति:- विद्यालय में पढ़ाते समय सभी अध्यापक यह बात अच्छी तरह से जानते हैं कि प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की क्षमता अलग-अलग होती है। यह बात उनकी दिमागी अवस्था और शारीरिक रचना इत्यादि से सम्बंधित होती है। इसलिए अध्यापक को अलग-अलग अध्यापन पद्धति का उपयोग कर इस इस तरह से पढ़ाना चाहिए ,ताकि बच्चे उस विषय से प्रभावित हो सकें। कई प्रकार की अध्यापन तकनीकों में से कौन सी तकनीक तथा इस प्रकार का ज्ञान जो विद्यार्थियों की आयु के अनुरूप हो ? और किस विद्यार्थी पर कौन सी तकनीक अधिक उपयुक्त होगी? इन सभी बातों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

शांति शिक्षा को विद्यार्थियों को किस प्रकार से सिखाया जाये? इससे अधिक आवश्यक यह है कि विद्यार्थियों को क्या सिखाया जाये ? विद्यार्थियों को जाति, धर्म से हटकर मानव अधिकार ,शांति,ख़ुशी और किस तरह से समस्या समाधान करना चाहिए ? यह बात सिखानी चाहिए। विद्यार्थियों को शांति की खोज भौतिक सुख सुविधाओं में खोजकर अपने आंतरिक मन में खोजनी चाहिए ,इस बात की शिक्षा पर अधिक जोर देना चाहिए। निम्लिखित अध्यापन पद्धतियों द्वारा विद्यार्थियों को शांति की शिक्षा दी जा सकती है :-

१. सहयोगी अधिगम द्वारा अध्यापन

२.समूह चर्चा द्वारा अध्यापन

३.समान अध्यापन

४.दिमागी कसरत द्वारा अध्यापन

५.वार्तालाप द्वारा अध्यापन

६.क्रियशील गतिविधियों द्वारा अध्यापन

७.कहानी कथन द्वारा अध्यापन

८.प्रयोग पड़ताल दवरा अध्यापन

९.जाँच पड़ताल द्वारा अध्यापन

१०.संवाद द्वारा अध्यापन

११.कर्मचारी अध्यापन

पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं :- यह वे कार्यक्रम है जो कक्षा के बहार पाठ्यक्रम के अंतर्गत दी गयी गतिविधियों के अनुसार ली जाती हैं | जिसका सम्बन्ध मूल्यों को सिखाना और चरित्र का निर्माण करना है | पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं द्वारा विद्यार्थियों को भविष्य की शिक्षा दी जाती है | विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के द्वारा सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं बल्कि पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं द्वारा उन्हें व्यावहारिक ज्ञान भी दिया जाता है | इस प्रकार के अभ्यास द्वारा वे अपनी कमजोरियों और क्षमताओं को अच्छी तरह से समझने लगते हैं, जिससे वे अपना सर्वांगीण विकास आसानी से कर पाते हैं

| इसके द्वारा विद्यार्थी समूह में कार्य करना सीखते हैं, उसी के साथ उनमे नेतृत्व करने की क्षमता तथा निर्णय की भी क्षमता का विकास स्वयं होने लगता है | इन क्रियाओं द्वारा विद्यार्थियों को सहिष्णुता, अहिंसा, सहयोग, शांति निर्णय क्षमता आदि कई मूल्यों को आत्मसात कराया जा सकता है |

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए ही पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का आयोजन निम्न रूपों में किया जा सकता है

१. विद्यालय में सुबह की सभा द्वारा २. खेल-कूद द्वारा ३. वाद-विवाद द्वारा

४. क्लब के माध्यम से ली जाने वाली गतिविधियों द्वारा ५. एन.सी.सी व एन.एस.एस द्वारा

६. स्काउट-गाइड द्वारा ७. सांस्कृतिक मिलाप द्वारा ८. संगीत, नृत्य और नाटक द्वारा

कर्मचारियों का विकास :- कर्मचारियों का विकास किया जाना शांति शिक्षा को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने हेतु अतिआवश्यक है | क्योंकि कर्मचारी वर्ग के उत्साह और तत्परता से ही विद्यालय के सारे काम समय पर और व्यवस्थित तरीके से होते हैं | इसलिए आवश्यक है कि कर्मचारियों के विकास हेतु व्यक्तिगत और व्यावसायिक रिश्तों को सुदृढ़ कर अंतर्राष्ट्रीय समझ, लोकतंत्र तथा शांति को बनाये रखा जा सकता है | इसके लिए उन्हें समय-समय पर प्रेरणा देना तथा उनकी कार्यसंतुष्टि को संस्था द्वारा महसूस कराना चाहिए | इन सभी बातों का विकास निम्न रूप में किया जा सकता है |

१. कर्मचारियों की समय-समय पर बैठक बुलाना २. कर्मचारियों हेतु कार्यशालाओं का आयोजन करना

३. कर्मचारियों को समय-समय पर प्रशिक्षण देना ४. कर्मचारियों हेतु शांति शिक्षा पर संगोष्ठी कराना

५. कर्मचारियों को प्रोत्साहन देना

कक्षा नियोजन :- कक्षा में कई प्रकार के धर्म,जाति के विद्यार्थी एक साथ शिक्षा ग्रहण करने आते हैं ,जिस कारण शांति की संस्कृति को स्थापित किया जाना अतिआवयशक होता है | विद्यालय में विद्यार्थी घर के बाहर के संस्कार और मूल्यों को आत्मसात करते हैं इसलिए शांति कक्षा के माध्यम से वे अपने जीवन में आने वाले संघर्षों व समस्यायों का समाधान शांति से करना सीखते हैं तथा हिंसा के बदले अहिंसा को अपनाने पर अधिक जोर देते हैं | शांति शिक्षा द्वारा शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों में सकारात्मक संबंधों का निर्माण किया जा सकता है |शांति शिक्षा के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों की कई प्रकार की समस्यायों का समाधान कर सकता है जैसे :-१.विद्यर्थियों की व्यवहार से सम्बन्धी समस्या २.शिक्षा से सम्बन्धी समस्या ३.क्षमता से सम्बन्धी समस्या ४.कौशलों से सम्बन्धी समस्या आदि | विद्यार्थियों के अंदर अच्छे सदाचार ,नीतियां,अच्छे-बुरे की समझ,समस्या समाधान ,सुनने और समझने की क्षमता का विकास करना,आदि कई बातों का विकास करना अध्यापक का कर्तव्य है| इसलिए कक्षा में शांति शिक्षा के लिए निम्न कार्य किये जाने चाहिए :- १.कक्षा में शांति शिक्षा का नियोजन करने हेतु अनुशासन का पालन करना चाहिए २.कक्षा का वातावरण सदैव आनंदपूर्ण रखना चाहिए जिससे विद्यार्थियों का व्यवहार अच्छा रहता है ३.कक्षा में अच्छा कार्य करने वाले विद्यार्थियों को समय-समय पर प्रोत्साहित करना चाहिए ४.कक्षा में कमजोर छात्रों को समय-समय पर प्रेरित करते रहना चाहिए ५.विद्यार्थियों को बिना किसी भेदभाव के कार्य करना सिखाया जाना चाहिए ६.विद्यार्थियोंको समस्या आये ही नहीं ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए |

विद्यालय नियोजन :- शांति शिक्षा को सही रूप में स्थापित करने के लिए पाठ्यक्रम के साथ ही विद्यालय का नियोजन भी आवश्यक है,जिसके लिए संस्थापक द्वारा सर्वप्रथम विद्यालय ,महाविद्यालय का वातावरण लोकतान्त्रिक बनाना चाहिए |इसके लिए कई पद्धतियों और उनका क्रियान्वयन किया जाना आवश्यक है जैसे :-१.अच्छे वातावरण हेतु सकारात्मक भाषा और वाणी का पालन किया जाना चाहिए २.विद्यार्थी केंद्रित शिक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए

३.विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ावा देना चाहिए ४.विद्यार्थियों की गलतियों पर उन्हें कठोर सजा न देकर सामान्य सजा देनी चाहिए ५.विद्यालय वातावरण को स्वस्थ रखने हेतु सभी को मिल-जुलकर रहना चाहिए |

उपरोक्त सभी माध्यमों को यदि पूरी ईमानदारी से निभाया जाये तो शांति को स्थायी रूप से स्थापित किया जा सकता है | इन सब के अतिरिक्त विद्यार्थियों में अवांछनीय व्यवहार परिवर्तन के लिए १. बालक में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों के विकास के लिए २. आदर्श व्यक्तित्व निर्माण व सर्वांगीण विकास के लिए ३.सहअस्तित्व की भावना के विकास के लिए ,शांति शिक्षा की व्यवस्था दो प्रकार से की जा सकती है :-

१. सैद्धांतिक रूप में-इसके लिए पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्ष,मूल्य शिक्षा,पर्यावरण शिक्षा आदि विषयों को शामिल करते हुए छात्रों को इनके महत्व,स्वयं शिक्षक की रूचि व एक नैतिक जिम्मेदारी निभाना |

२.व्यावहारिक रूप में -(अ) साहित्यिक कार्यक्रम -निबंध,वाद-विवाद ,भाषण ,स्लोगन आदि (ब)सांस्कृतिक कार्यक्रम -नाटक,कहानी,नृत्य,कविता,एकांकी,प्रभात फेरी (स) फिल्म,शांति चित्र,पोस्टर,प्रदर्शनी आदि (द) विश्व शांति दिवस का आयोजन (य) सर्वधर्म प्रार्थना (र) शांति विषयक वार्ता,संगोष्ठी व कार्यशालाओं का आयोजन (ल) प्राकृतिक स्थलों का भ्रमण (व) योग शिविरों का आयोजन (प)शांति पुरस्कारों का आयोजन (फ) मौन का अभ्यास (ब) अन्य क्रियाएं-शांति गीत,शांति पेंटिंग,शांति के ऊपर लिखना व बोलना |

यह एक ऐसी पहल है जो आने वाले भारत की नींव को सुदृढ़ आधार प्रदान कर अगली पीढ़ी के लिए एक अच्छा पटल दे सकेगा |अन्य रूपों में शांति शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम पाठ्यसहगामी क्रियाएं आयोजित की जा सकती हैं जैसे:- १.कक्षा के विभिन्न स्तरों पर शांति शिक्षा को अनिवार्य करना २.शांति शिक्षा से सम्बंधित सत्रीय कार्य को मूल्यांकन में स्थान देना ३. राष्ट्रीय पर्वो का आयोजन ४.कक्षाओं का आदर्श नामकरण ५.विद्यालय व महाविद्यालय सामग्री पर आदर्श लेखन ६.प्रातःकालीन आदर्श गायन खेल-कूद का आयोजन ७.विभिन्न प्रदर्शनियों व भित्ति पत्रिका का आयोजन ८.विभिन्न वाद-विवाद व संगोष्ठियों का आयोजन ९. निबंध व चित्र कला प्रतियोगिता का आयोजन १०.राष्ट्रीय स्तर पर शांति रैली का आयोजन |

शांति शिक्षा के क्षेत्र:- शांति शिक्षा का विस्तार विभिन्न स्तरों पर भी किया जा सकता है -जैसे १. व्यक्तिगत तथा स्वयं -समृद्धि स्तर पर २.विद्यालय तथा सामुदायिक स्तर पर ३.राष्ट्रीय स्तर पर ४. विश्वव्यापी स्तर पर।

राष्ट्रीय स्तर पर:- राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा को वर्तमान समय में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों की समझ विकसित करना जरूरी है | क्योंकि विद्यार्थी ही किसी भी राष्ट्र का भविष्य होते हैं और वही समाज के निर्माण में अपना योगदान देते हैं | इसके लिए निम्न कार्य करना चाहिए :- १. सामंजस्य को बढ़ावा देना २. औरतों की गरिमा को बनाये रखना ३. अपनी संस्कृति के अच्छे मूल्य व रीति-रिवाज को महत्व देना ४. पर्यावरण व प्रकृति की रक्षा करना ५. राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा का ध्यान रखना ६. हिंसा को खत्म करने का प्रयास करना ७. अहिंसा को अपना कर उसका प्रचार करना

विश्व व्यापी स्तर पर:- शिक्षा का सबसे प्रमुख व महत्वपूर्ण कार्य विश्व स्तर पर उसका सर्वांगीण विकास करना है, क्योंकि कोई भी देश अकेले बहुत समय तक अपनी प्रगति नहीं कर सकता और न ही अलग रहकर ज्यादा समृद्ध हो सकता है | इन सबके लिए विद्यार्थियों को विश्व व्यापी जागरूकता लाने हेतु वाद-विवाद, भाषण, संवाद तथा निबंध आदि का आयोजन निम्न मुद्दों पर किया जाना चाहिए :- १. जनसँख्या २. लिंगभेद ३. युद्ध ४. आतंकवाद ५. विश्व व्यापी संस्कृति ६. मानव अधिकार ७. सामुदायिकता ८. पर्यावरण की सुरक्षा ९. जानवरों की सुरक्षा १०. बेरोजगारी ११. आधुनिकता १२. मानवीय मूल्य १३. संस्कार १४. असमानता १५. भ्रष्टाचार आदि |

निष्कर्ष :- मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य ही शान्ति की प्राप्ति है | वर्तमान में रोटी, कपड़ा और मकान जैसी सामान्य जरूरते काफी हद तक पूरी हो चुकी हैं और हवा पानी के बाद सबसे बड़ी जरूरत शांति को माना जा रहा है | इस प्रकार स्पष्ट है की शांति के लिए शिक्षा वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता के रूप में है | इसके लिए पूरे लेख में बताये गए विभिन्न तथ्यों व पक्षों के द्वारा शांति शिक्षा को किस प्रकार बालमन में व समस्त नागरिकों को सिखाने हेतु उपाय बताये गए हैं जिसके द्वारा राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी शांति स्थापित करने में मदद मिल सकती है |

सन्दर्भ :-

१. अनेजा, (१९८६), शांतिपर्व में नैतिक मूल्य | दिल्ली कादंबरी प्रकाशन

२. भोसले, (२००९), शिक्षणातीत बदलते विचार प्रवाह, कोल्हापुर, फड़के प्रकाशन

३. जगताप, (२००६,२००८), शिक्षणातीत नवप्रवाह व नवप्रवर्तने, पुणे : नित्य नूतन प्रकाशन